बौद्ध धर्म में डॉ. आंबेडकर का योगदान

पीएच.डी. शोधार्थी
सुरतनभाई मानसिंगभाई वसावा
हिंदी विभाग
गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-14 गुजरात

धर्म परिवर्तन में डॉ. आंबेडकर के जीवन का क्रांतिकारी कदम है। दलित मुक्ति की दिशा में यह सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। उनकी धारणा थी कि दलितों की अधोगति का कारण हिंदु धर्म ही है। इसको त्यागे बिना शोषण, उत्पीड़न की समाप्ति नहीं हो सकती। उनकी दृष्टि में दलितों का भविष्य धर्मपरिवर्तन पर निर्भर है। यह उनका जिंदगी और मौत का प्रश्न है। धर्मपरिवर्तन करने से पूर्व उन्होंने कुछ प्रमुख धर्मो का जैसे कि - हिंदू, ईसाई, इस्लाम, सिख और बौद्ध धर्म का अध्ययन किया। धर्मो को वे जीवन के लिए अंत्यत आवश्यक मानते थे। उनके मत में सच्चा धर्म समाज की बुनियाद होता है। उन्होंने माना कि धर्म मनुष्य के लिए न कि मनुष्य धर्म के लिए। अतरू धर्म को मानवता की सेवा करनी चाहिए।

डॉ. आंबेडकर ने धर्म के बारे में बताया गया है कि भंसद्धर्म सद्धम्म में चार मुख्य विशेषताएँ होती हैं रू 1. नैतिकता को धर्म का मूलाधार होना चाहिए। नैतिकता ही समाजको सदाचारी बनाती है। बहुसंख्य लोग नैतिकता से परिचालित होते हैं। विघटनकारी अनैतिक तत्वों को कानून द्वारा नियंत्रित किया जाता है।इस्लाम व ईसाई धर्मों में नैतिकता का केंद्र मानव संबंध नहीं ईश्वर है। इस्लाम का अर्थ ईश्वर के प्रति समर्पण है। इस्लाम का मूलाधार विश्व के निरंकुश शासक, अंतिम न्यायाधीश के प्रति विश्वास है। कुरान के मुताबिक आचरण करना ही नैतिकता है। नैतिकता का संबंध वहीं आता है जहाँ एक आदमी का संबंध दूसरे से होता है। ये धर्म मनुष्य को ईश्वर के संपर्क में जाने का प्रयास करते हैं, किंतु आदमी के पास लाकर सामाजिक बंधुत्व नहीं बढ़ाते। जिन हिंदूओंने धर्मान्तर कर ईसाई या इस्लाम धर्म आपनाया है, उनके साथ समानता का व्यावहार नहीं करते।

2. उनके अनुसार धर्म को विज्ञान के अनुकूल होना चाहिए। इसके बिना धर्म का सम्मान ही नहीं घटता अपितु वह उपहास का पात्र बनाता है। ऐसा धर्म कालांतर में अपना अस्तित्व भी खो देता है।

3. उसमें स्वतंत्रता, समानता तथा भाईचारे के सिद्धांतों के परिपालन पर जोर दिया जाना चाहिए। जब तक कोई धर्म इन तीन सिद्धांतों को स्वीकार नहीं करता, तब तक उसका भविष्य अंधकारमय रहता है।

4. धर्म को, निर्धनता की अवस्था को पवित्र स्थिति नहीं घोषित करना चाहिए।

डॉ. आंबेडकर ने इन चार आधारों पर धर्मो की परीक्षा की और कहा कि भजहाँ तक मैं जानता हूँ बौद्ध धर्म ही ऐसा धर्म है, जो इन चार विशेषताओं की पूर्ति करता है। बुद्ध धर्म की शिक्षायें मूलतरू निरीश्वरवादी या मनौवैज्ञानिक है। ये मानवता वादी अधिक हैं। उनमें भय एवं दण्ड का स्थान नहीं है। बौद्ध धर्म का मैलिक उद्देश्य दुरूख की स्थिति का अन्त करना है. लोगों को भौतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से सुदृढ बनाना है। वह केवल बौद्ध लोगों के बंधुत्व में ही विश्वास नहीं करता, बल्कि विश्वशांति एवं विश्वबंधुत्व उसका व्यापक ध्येय है। डॉ. आंबेडकरके अनुसार महात्मा बुद्ध का धर्म किसी अभौतिक आत्मा को नहीं मानता। चारों भौतिक तत्व मृत्यु के समय बिखरकर अपने अपने तत्वों में विलीन हो जाते हैं। इस प्रकार आत्मा नहीं तो पुनर्जन्म संभव नहीं है। डॉ. आंबेडकर नें धर्मान्तर के औचित्य पर दलितों के समक्ष तीन पहलुओं से विचार रखे सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक।

ईसाई, मुसलमान, सिक्ख धर्म आदि के गहरे अध्ययन के उपरांत भी वह यह निर्णय नहीं कर पा रहे थे कि कौन सा धर्म दलित वर्गकी दासता से युक्त मानसिकता की मुक्ति के लिए समीचीन हो सकता है। कहीं ऐसा न हो कि वे दलित वर्ग के लिए जिस धर्म को चुने, उस धर्म में भी कुछ दिनों में उन्हें वे ही अभिशाप भोगने के लिए विवश होना पड़े, जिनसे उनका वर्ग हिंदू धर्म में पीड़ित था। वस्तुतरू यह निर्णय ले लेना सहज नहीं था। उन्हें अन्य धर्मों में भी असमानता तथा धर्मान्धता के उदाहरण मिल रहे थे। वे चाहते थे कि भजो धर्म स्वीकारा जाये, उससे सदियों से चली आ रही दलित वर्ग की मानसिकता उन्मुक्त हो सके और सम्मान से जी सके। धर्म के इस द्वन्द्व से परिवृत्त उनका मन उद्विग्न था और वे स्थिर चित से निर्णय लेने की स्थिति अपने में तलाश कर रहे थे। क्योंकि उनकी दृष्टि में बिना धर्म की शरण में गये मानव जाति का उद्धार असम्भव है। धर्म ही मानव जाति की समग्र समस्याओं और कठिनाइयों का निराकरण कर सकता है।

डॉ. आंबेडकर को बौद्ध धर्म के प्रति बचपन से ही आकर्षण था। धर्म में वह अपने को तलाश कर रहे थे। धर्म में उनकी अटूट श्रद्धा थी। हिंदू धर्म उन्हें रास नहीं आया था। उसमें जन्म पाकर वह आजन्म उपेक्षित

तथा अपमानित होते रहे थे। वह धार्मिक पुरुष थे। उन्होंने मुस्लिम, सिक्ख और जैन धर्म का अध्ययन किया था। उन्होंने अपने को बौद्ध धर्म के निकट पाया था। उनकी अवधारणा थी कि कोई भी सरकार, संस्था या समाज क्यों न हो, यदि उसमें मनुष्य की इच्छापूर्ति के साधन नहीं है तो वह बेकार है। वह दुख, अभाव व पीड़ा में शांति देने वाली होनी चाहिए। धर्म इन्ही अभावों की सम्पूर्ति का एक साधन है। वह अन्त में, धर्म की प्यास को और नहीं रोक सके और बौद्ध हौ गये।

डॉ. आंबेडकर ने बौद्ध धर्म अपनाने का निर्णय सन 1956 में लिया। अपनी एक विशाल रैली में अपने साथियों को भी बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने की सलाह दी। वयोवृद्ध भिक्षु महास्थिवरचंद्रमणी द्वारा 14 अक्तूबर, सन 1956 को पाँच लाख व्यक्तियों को बौद्ध धर्म की दीक्षा दिलायी। सारा हिंदू समाज अपलक देखता रह गया। वहाँ के पर्यावरण में अधोलिखित समवेत स्वर गूँज उठा –

बुद्धम् शरणम् गच्छामि।
धम्मं शरणम् गच्छामि।
संघ शरणम् गच्छामि।

वह दृश्य नयनाभिकराम था। भगवा वस्त्र पहने हजारों संन्यासी नगर की परिक्रमा कर रहे थे। देश के अनेक कोनों से दलित वर्ग नें बौद्धधर्म स्वीकार करने के समाचार मिल रहे थे। भिक्षु चंद्रमणि द्वार बताई गई पाँच प्रतिज्ञाओं को डॉ. आंबेडकर और उनकी पत्नी ने दोहराया मारना, चोरी, झूठ बोलना, अनैतिक संबंध और शराब पीने से परहेज। अंत में वे भगवान बुद्ध की मूर्ति के आगे तीन बार झुके और उनके चरणों में सफेद कमल की पंखुड़िया रख दी। इसके बाद उन्होंने भीड़ को संबोधित करते हुए स्वयं निर्मित 22 प्रतिज्ञाओं की घोषणा की। भमैं हिन्दु धर्मका परित्याग करता हूँ जैसे शब्द कहते हुए वे अत्यंत भावुक हो गए और उनकी आवाज़ दब गई। उनके लिए वह वक्त बहुत पीड़ा का वक्त रहा होगा जब वे अपने पूर्वजों के धर्म को त्याग ने के लिए मजबुर हो गए थे। उन्होंने फिर भीड़ में उपस्थित लोगों से पूछा कि जो बौध धर्म अपनाना चाहते हैं वे खड़े हो जाएँ। इसके उत्तर में सारा समूह खड़ा हो गया और डॉ. आंबेडकर ने बढ़ कर उन्हेंतीन आत्रय, पाँच नियम तथा 22 प्रतिज्ञाओं के अधीन कर दिया। नागपुर उच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायधीश डॉ.बी. नीयोगी ने भी इसी अवसर पर बौद्ध धर्म अपना लिया।

16 अक्तूबर, 1956 को बैरिस्टर राजाभाऊ खोबरागडे के आग्रह पर डॉ. आंबेडकर ने चंदपुर में ऐसे ही समूह के धर्म परिवर्तन समारोह पर उपस्थित होकर असंख्य आदमी, औरतों और बच्चों को इस अवसर पर प्रतिज्ञाएँ दिलाई थी। वे फिर दिल्ली लौट आए और अपने मित्रों और शुभचिंतकों के कई बार आग्रह करने पर नेपाल,काठमंडू में आयोजित चतुर्थ बौद्धिस्ट कान्फ्रेस में वह गये थे और वहाँ उन्होंने घोषणा की थी कि बौद्ध मत सर्वश्रेष्ठ धर्म है। वह सामाजिक दृष्टिकोण से भी सर्वोच्च है। नेपाल की सरकार ने जो कि इस विश्व में एक मात्र हिंदू राष्ट्र है, 15 नवम्बर, 1956 को सार्वजनिक अवकाश घोषित कर दिया था। नेपाल के राजा महेन्द्र ने

स्वंय इस संमेलन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर दिए गए भाषण में डॉ. आंबेडकर ने कहा कि भंवे यह मानते है कि बौद्ध धर्म न केवल एक महान धर्म है बल्कि वह एक उत्तम सामाजिक व्यवस्था भी है। 20 नवम्बर, 1950 को उन्होंने बुद्ध और कार्लश् नाम का एक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि भंबुद्ध और कार्ल मार्क्स का लक्ष्य एक ही था क्योंकि दोनों का उद्देश्य था धरती से दुख और शोषण मिटाना। फिर भी उन्होंने कहा कि जहाँ तक इस साधन की बात है, बौद्ध धर्म और साम्यवाद एक दूसरे के काफि अलग है। जहाँ साम्यवाद सारे हिंसक तरीके अपनाता है वहाँ बौद्ध धर्म अंहिसा और सदाचार पर जोर डालता है। उनके अनुसार अगर बौद्ध सदाचारी नहीं है तो कुछ भी नहीं है। यह सच था कि बौद्ध धर्म में भगवान नहीं होता। पर बौद्ध धर्म ने सदाचार को भगवान के स्थान पर रख लिया था। डॉ. आंबेडकर ने सारनाथ जाने के रास्ते में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और काशी विद्यापीठ में भाषण दिए, जहाँ उन्होंने प्रभावशाली तरीके से बौद्ध धर्म के त्तव उन लोगों को बताया। इस तत्व का विस्तारपूर्वक वर्णन डॉ. आंबेडकर की बुद्ध और उनका धर्मश् नामक पुस्तक में किया गया है।

15 अक्तूबर, 1956 में हुए प्रसिद्ध धर्म परिवर्तन के एक दिन पूर्व डॉ. आंबेडकर ने यह कहा कि भंबौद्ध धर्म का मौलिक सिद्धांत है, समानता। अरे भिक्षुओं! तुम अलग अलग जाति के हो और विभिन्न देशों से आए हो। जिस तरह बड़ी नदियाँ, विशाल सागर में गिरने पर अपनी पहँचान खो देती है, उसी तरह मेरे भाईयों, जब ये चार जातियाँ क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र तथागत, (भगवान बुद्ध) द्वारा प्रस्तुत किए गए मत और अनुशासन को मानने लगते हैं, तब वे अपनी जाति और श्रेणी के अलग अलग नाम त्याग कर एक समाज के सदस्य बन जाते हैं। यही भगवान बुद्ध के शब्द है।

1950 में भारत के विशेष प्रतिनिधि को उन्होंने बताया कि वे भारत के सात करोड़ हरिजनों को बौद्ध धर्म स्वीकार करने के लिए कहेंगे। उन्होंने कहा कि धर्म मानवता के लिए आवश्यक है। जब धर्म समाप्त होगा तो समाज भी समाप्त हो जाएगा। आखिर कोई भी सरकार मनुष्य को वह सुरक्षा और अनुशासन की छाया नहीं दे सकती है जो नीति और धर्म से उसे मिलती है।

जो धर्म साम्यवादी विचारधारा का जवाब नहीं दे सकता है, वह जीवित नहीं रह सकता। भंसाम्यवाद का विचार केवल बौध धर्म है , यह बात आंबेडकर ने 5 फरवरी, 1956 को दिल्ली के बुद्धविहार में एक प्रवचन के दौरान कही थी।

इस तरह प्रदीर्घ चिंतन के बाद ही आंबेडकर ने अंतिम निर्णय लिया। जैसा कि एक पत्रिका में उन्होंने बताया है कि,भ डॉ. आंबेडकर कुछ सालों से बौद्ध धर्म के किनारे पर खड़े अनिश्चय की स्थिति में रहे। उन्होंने अंत में अक्तूबर, 1956 में बौद्ध धर्म में दीक्षा ली। नागपुर में विशाल जन-समूह के समक्ष एक महान् भाषण में उन्होंने जनता को बौदध धर्म में दीक्षित होने का आह्वान किया। जैसे 1936 में उन्होंने सभी हिंदुओं के धर्म परिवर्तन की बात कही थी। उन्होंने उस समय नये धर्म के उसबीज को स्पष्ट करने का प्रयास किया था, जिसे वे चाहते थे कि हिंदु धर्म अपना ले। अब उन्होंने खुले आम सबको बौद्ध अपनाने और नैतिक सिद्धांतों पर समतामूलक व्यवस्था के निर्माण के लिए आगे आने को कहा।

किंतु इससे पहले कि वे बौद्ध धर्म के पुनर्जागरण के लिए बड़े पैमाने पर अभिमान चला पाते और एक व्यापक, प्रगतिशील, वैकल्पिक समाज-व्यवस्थाके निर्माण की और अपनी शक्ति लगा सकते, मृत्यु ने उनके दोहरे मिशन को समाप्त कर दिया ।

अतरूनिष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि आज डॉ. आंबेडकर हमारे बीच में नहीं हैं फिर भी उनका जीवनोन्मुख चिंतन और मानव मात्र के लिए की गई उनकी सेवाएँ बराबर हमारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं। यह महसूस कराती हैं कि वे केवल अछूतों के नहीं, वे केवल बौद्धों के नहीं और वे केवल उपेक्षितों के नहीं पर वे उन सबके थे जिनमें मानवता की खूशबू की रत्ती भर पहँचान थी। उनके लिए धर्म बिना गति नहीं थी, जीवन नहीं था। जीवन और समाज की सक्रियता वे धर्म से मानते थे। धर्म उनकी जीवनास्था से जुड़ा था। धर्म उनके लिए मार्क्स की तरह अफीम नहीं था और वे धर्म के प्रति अंधभक्त नहीं थे। हिंदू धर्म की निष्क्रियता के कारण उनको विवश होकर धर्म-परिवर्तन का निर्णय लेना पड़ा था। धर्म-परिवर्तन उनके लिए सहज प्रक्रिया नहीं थी। इससे पूर्व वे जिस धर्म में पैदा हुए थे, उसमें उन्होंने जी-जान से यह प्रयत्न किया था कि उन्हें और अवर्णीय समाज समाज को जीने का सम्मान पूर्वक अधिकार मिल जाए। उन्होंने इसके लिए समस्त उस प्रक्रिया से गुजर जाना उपर्युक्त समझा जिसके द्वारा धर्म में पुनर्जागरण की संभावना पैदा हो सके और जीवन क्रांति की नई दिशा उद्घाटित हो सके। पर इन सबसे कोई लाभ नहीं हुआ और अंत में वे मन मसोसकर धर्म-परिवर्तन की दिशा में चल पड़े और डॉ. आंबेडकर ने बौद्ध धर्म के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। अंत तक बौद्ध धर्म की सेवा करते रहें और बौद्ध धर्म में अपना सारा जीवन यापन कर दिया।

संदर्भ

1. लिमये, मधु, बाबा साहेब आंबेडकर–एक चिंतन, प्रकाशक रू आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006, प्रथम संस्करण रू 1991
2. भटनागर, राजेन्द्रमोहन, डॉ. आंबेडकर चिंतन और विचार, प्रकाशक रू जगतराम एण्ड सन्स, सरस्वती भंडार गांधीनगर, दिल्ली–110031, प्रथम संस्करण–1992
3. विश्वास, नीतीश, अनुवादक, गुप्ता, सुशील, राष्ट्रनेता डॉ. बी.आर. आंबेडकर, प्रकाशक रू वाणी प्रकाशन, 21–ए दरियागंज, नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण–2004
4. शहारे, एम.एल., अनुवादक, शर्मा, श्यामा, डॉ. भीमराव आंबेडकर जीवन और कार्य, प्रकाशक रू राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, संस्करण रू 1993
5. सिंह, तेज, आंबेडकरवादी विचारधारा और समाज, प्रकाशक रू स्वराज प्रकाशक, दिल्ली–110085, प्रथम संस्करण– 2008
6. राम, जगजीवन, भारत में जातिवाद और हरिजन समस्याँ, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण– 1996
7. पटोरिया, कुसुम, युगप्रणेता आंबेडकर, प्रकाशक रू विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर–440012, संस्करण रू 1994
8. भटनागर, राजेन्द्र मोहन, डॉ. आंबेडकर जीवन और दर्शन, प्रकाशक रू किताबघर, गांधीनगर, दिल्ली–110031, प्रथम संस्करण–1982